HOMEWORK

17/05/2021 गिल्लू

Date ______
Page ______

पाठ का सारांश

गिल्लू पाठ में एक गिलहरी के बच्चे की चंचलता और उसके क्रिया कलापों के बारे में बताते हुए उसकी मृत्यु तक का वर्णन किया है। एक दिन लेखिका ने दो कौओं द्वारा घायल किए गए एक गिलहरी के बच्चे को देखा। वह उसे घर लाकर उसका इलाज करने लगे। कुछ तीन दिन में ही वह गिलहरी का बच्चा कूदने - फाँदने लगा। लेखिका ने उसका नाम "गिल्लू" रखा। वह लेखिका के घर मे एक ~~डलिया~~ डलिया में रहने लगा और फल में वह लेखिका के साथ घुल - मिल गया। वह हर समय लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए इधर - उधर दौड़ता रहता। लेखिका कई बार उसे लिफाफे मे बंद कर देती। भूख लगने पर वह चिक - चिक करता था। एक दिन लेखिका के नजर में आया की गिल्लू बाहर घुमती हुई गिलहरियों को देख रहा था, तब उन्होंने उसे मुक्त करने को तय किया। फल में उन्होंने खिडकि की जाली खोल दी। रोज़ जब लेखिका बाहर जाती वह भी बाहर जाता और लेखिका के लौटने पर वह भी आ जाता। गिल्लू लेखिका के साथ खाने के लिए बहुत आग्रह था,

यह हरकत लेखिका को हैरान कर देता। काजू गिल्लू का अति प्रिय था। एक बार लेखिका दुर्घटना से घायल हो गयी थी और अस्पताल मे थी। इस समय गिल्लू अपना प्रिय खाद्य काजू भी नहीं खाया, वह सिर्फ लेखिका के लौटने के अपेक्षा मे रहता था। लेखिका लौटने पर गिल्लू ने इनकी परिचारिका के समान सेवा की। पर अंत में गिल्लू के आखरी दिन आ गये थे। वह खाना-पीना और बाहर जाना भी छोड़ दिया। रात भर लेखिका के उंगली पकड़े रहने बाद वह सुबह की पहली किरन में मौत की नींद सो गया। लेखिका ने सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू की समाधि बनाई। उन्हे विश्वास था कि एक दिन गिल्लू जूही के छोटे से पीले फूल के रूप में फिर से खिलेगा और वह फिर से उसे अपने आस-पास अनुभव कर पाएगी।